

अजा एकादशी कथा in Hindi

इस कथा के अनुसार, एक राज्य में हरिशचंद्र नाम का एक चक्रवर्ती राजा रहता था। अपने बच्चे की मृत्यु से दुखी होकर राजा मायूस रहने लगा। उससे उसका राजपाट भी छिन गया था। उसने अपना राज्य छोड़ दिया और अपनी पत्नी के साथ दूर राज्य के बाहर चला गया।

इसके बाद राजा हरिशचंद्र एक चांडाल के यहां काम करने लगा। यहां वो मृतकों के वस्त्र लेता था। राजा हमेशा सत्य के मार्ग पर चलता था। वो जब भी अकेला होता था तो अपने दुखों से मुक्ति पाने का रास्ता ढूंढता था। वह सोचता था कि क्या ऐसा करें, जिससे उसका उद्धार हो सके।

राजा सिर्फ अच्छे कर्म करता था। एक दिन जब वह चिंतित होकर बैठा था, तभी वहां गौतम ऋषि आए। राजा ने उनको प्रणाम किया और अपने दुखों से मुक्ति पाने का रास्ता पूछा।

राजा को परेशान देखकर ऋषि ने कहा, "कि तुम भाग्यशाली हो क्योंकि आज से 7 दिन बाद भाद्रपद कृष्ण एकादशी यानी अजा एकादशी व्रत आने वाली है। जो भी इस व्रत को विधि पूर्वक करता है उसका कल्याण जरूर होता है।"

इतना कहने के बाद गौतम ऋषि वहां से चले गए।

सात दिन के बाद राजा ने अजा एकादशी का व्रत रखा और ऋषि के बताए अनुसार ही भगवान विष्णु का पूरे विधि- विधान से पूजन किया। भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने पूरी रात जागरण किया और अगले दिन सुबह पारण करके व्रत को पूरा किया।

इसके बाद भगवान विष्णु की कृपा से राजा के सारे दुख समाप्त हो गए। उसने देखा कि उसकी पत्नी पहले की तरह रानी के समान दिखने लगी है। व्रत के फल से राजा को अपना खोया हुआ राजपाट भी दोबारा मिल गया।

Aja Ekadashi Vrat Katha in English

According to this story, there was a great king named Harishchandra in a kingdom. Grieving the loss of his child, the king became deeply sorrowful. His kingdom was also taken away from

him. He left his kingdom and went far away beyond its borders with his wife.

After this, King Harishchandra began working for a chandala (caretaker of cremations). Here, he would collect clothes from the deceased. Despite his hardships, the king always walked the path of truth. Whenever he was alone, he would seek a way to free himself from his sorrows, pondering over what he could do to attain salvation.

The king always performed good deeds. One day, as he sat in distress, Sage Gautama arrived there. The king greeted him and asked him for a way to be free from his sorrows.

Seeing the king's anguish, the sage said, "You are fortunate because in seven days, on Bhadrapada Krishna Ekadashi, the auspicious Aja Ekadashi fast is approaching. Whoever observes this fast with proper devotion is certainly blessed."

After saying this, Sage Gautama departed.

Seven days later, the king observed the Aja Ekadashi fast. Following the sage's instructions, he worshipped Lord Vishnu with full devotion and rituals. To please Lord Vishnu, he remained awake the entire night, and the next morning, he broke his fast and completed the ritual.

By the grace of Lord Vishnu, all of the king's sorrows were eliminated. He saw that his wife once again appeared as a queen. Due to the merit of the fast, the king also regained his lost kingdom.